तुरन्त स्कूल खोलो

शिक्षा सम्बंधी बहिष्करण रोको

5 SEPTEMBER 2021

यह अध्ययन वृत्तांत नैशनल कोएलिशन ऑन एजुकेशन इमर्जन्सी द्वारा तैयार किया गया था। इसमें 2020 की शुरुआत से 2021 के मध्य तक भारत और चुनिंदा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में किए गए अध्ययनों से प्राप्त डाटा को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। सम्पूर्ण अध्ययन संग्रह के लिए क्लिक करें.

अध्ययन के परिणाम लगातार गम्भीर स्थिति व्यक्त कर रहे हैं। लंबे समय तक स्कूल बंद रहने और ऑनलाइन/असंबद्ध (remote) शिक्षा की सीमित पहुँच का बच्चों के शैक्षिक, मानसिक, पोषण-सम्बंधी, सामाजिक और आर्थिक स्तरों पर बुरा असर पड़ा है।

90% से ज़्यादा वंचित वर्ग के माता-पिता (ग्रामीण क्षेत्रों में 97%) चाहते हैं कि स्कूल जल्द-से-जल्द खोले जाएँ (SCHOOL, 2021)। यूनेस्को ने मध्य 2020 से ही यह अनुमान लगाया था कि भारत में, प्राथमिक स्कूलों के लगभग 14 करोड़ और माध्यमिक स्कूलों के लगभग 13 करोड़ छात्र लॉकडाउन से प्रभावित हो चुके थे (यूनेस्को, 2020)। हमें 26 करोड़ बच्चों की शिक्षा को पुन: चालू और नवीकृत करने के लिए शीघ्र क़दम उठाना चाहिए।

सुविधा-हीन समुदायों के बच्चों के पास इंटर्नेट या सेल फ़ोन नहीं है।

- ग्रामीण क्षेत्रों के सिर्फ़ 4% छात्रों के पास आवश्यक डिजिटल उपकरण या इंफ़्रास्ट्रक्चर उपलब्ध है; शहरी क्षेत्रों में 80% से ज़्यादा छात्रों के पास आवश्यक डिजिटल उपकरण या इंफ़्रास्ट्रक्चर उपलब्ध नहीं है।
- न्यूनतम आय क्विनटाईल के सिर्फ़ 2% छात्रों के पास आवश्यक डिजिटल उपकरण या इंफ़्रास्ट्रक्चर उपलब्ध है।
- सिर्फ़ 4% एससी और एसटी, 8% मुस्लिम और 7% ओबीसी छात्रों के पास आवश्यक डिजिटल उपकरण या इंफ़्रास्ट्रक्चर उपलब्ध है। (Reddy et al., 2020)

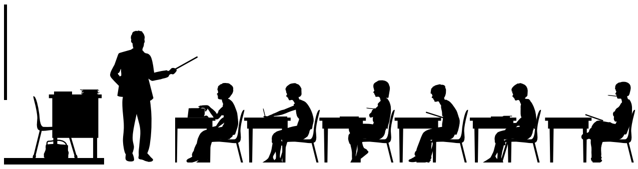

- राज्य सरकारों को जल्द ही स्कूल (आंगनवाड़ी से लेकर उच्च विद्यालय) खोल देने चाहिए।
- स्कूलों को सुरक्षित तरह से खोलने और बच्चों की पढ़ाई पुनः शुरू करने हेतु मदद के लिए दिशा-निर्देश बनाए जाने चाहिए।
- सभी शिक्षकों को तत्काल टीका लगाया जाना चाहिए ।

ऑनलाइन अध्यापन कला की कौन सी चुनौतियाँ हैं?

- सरकारी स्कूलों के 80% (बिहार में 100%) और निजी स्कूलों के 60% अभिभावकों को यह लगता है कि विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान नहीं की गयी (Oxfam, 2020)।
- सर्वे में आधे से ज़्यादा शिक्षकों का यह मानना है कि कक्षा में कराई जाने वाली पढ़ाई की तुलना में रिमोट शिक्षा सामग्री और तरीक़े कम प्रभावी हैं (UNICEF, 2021)।
- 50% शहरी शिक्षक और 40% ग्रामीण शिक्षक वॉटसएप और फ़ोन कॉल के माध्यम से छात्रों के संपर्क में थे (Singh et al., 2020)।

लड़कियों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने की संभावना कम है।

हाल ही में सेंटर फ़ॉर बजट एंड पॉलिसी स्टडीज़ द्वारा चार भारतीय राज्यों में 3176 परिवारों में किए गए सर्वे में यह पाया गया कि:

- 70% से अधिक परिवारों में फ़ोन पुरुष सदस्य के पास है।
- सिर्फ़ 26% लड़कियों ने, जिन्होंने सर्वे में भाग लिया, बताया कि वे घर पर बिना किसी रोक-टोक के फ़ोन इस्तेमाल कर सकती हैं।
- लड़कियों का समय घर की देखभाल और दूसरे कामों में ज्यादा व्यतीत होता है, और पढ़ाई में कम |

शिक्षा सम्बंधी हानि की अधिकता कितनी है?

- दुनियाभर में"बाधित शिक्षा" कोविड-19 के कारण स्कूल बंद होने के प्रमुख परिणामों में से एक है। कोविड-19 के कारण स्कूल बंद होने से शैक्षिक वर्ष की औसतन दो-तिहाई शिक्षा सम्बंधी हानि हुई (यूनेस्को, 2020)।
- सभी कक्षाओं के औसतन 92% बच्चों की पिछले वर्ष से लगभग एक भाषा में योग्यता जा चुकी है (अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, 2021)।
- सभी कक्षाओं के औसतन 82% बच्चों की पिछले वर्ष से लगभग एक गणित सम्बंधी योग्यता जा चुकी है (अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, 2021)।

पोषण के लिए बच्चे मिड-डे मील (दोपहर का भोजन) पर निर्भर हैं।

लॉकडाउन के समय पका हुआ खाना नहीं मिलने के कारण बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव हुआ हो सकता है। सुविधा-हीन समूहों की लड़कियों और बच्चों के लिए इसका प्रभाव और भी बुरा हो सकता है।

- वैश्विक स्तर पर इस महामारी ने अनुमानित तौर पर 115 मिलियन बच्चों को गंभीर कुपोषण के ख़तरे में डाल दिया (लैन्सेट कोविड-19 कमिशन, 2021)।
- औसतन 35% बच्चों को मिड-डे मील नहीं मिली। बाक़ी बचे 65% में से सिर्फ़ 8% को पका हुआ खाना, जबकि 53% को सूखा राशन और 4% को मिड-दे मील की जगह पैसे प्राप्त हुए (ऑक्सफ़ैम, 2020)।

बाल मज़दूरी और बाल विवाह में बढ़ोतरी

- एनएसएसओ (2018) डाटा से पता चलता है कि 35% स्कूल ड्रॉप-आउट आर्थिक गतिविधियों में कार्यरत होने और 26% आर्थिक तंगी के कारण होते हैं। बड़े स्तर पर दिहाड़ी मज़दूरों की नौकरी चले जाने के कारण बाल मज़दूरी में बढ़ोतरी होने की अधिक संभावना है।
- पीटीआई (2020) के मुताबिक़ भारत में 'चाइल्डलाइन 1098' ने लॉकडाउन लगने के समय से हेल्पलाइन पर आने वाली कॉल में50% की बढ़ोतरी की घोषणा की, जो शोषण और हिंसा से बचाव के बारे में थीं।
- सेंसस (2011) के डाटा के अनुसार, भारत में 10 मिलियन से अधिक बच्चे (5-14 वर्ष) और 23 मिलियन से अधिक किशोर-किशोरियाँ उद्योगों में कार्यरत थे। अब यह डर है कि स्कूल बंद होने के कारण यह संख्या बढ़ रही है।

महामारी के कारण आर्थिक तंगी

चार भारतीय राज्यों में 3176 परिवारों के बीच हुए सर्वे से निम्नलिखित बातें पता चलीं:

- सुविधा-हीन निचली जाति के समूह तीन के कारक से प्रभावित होते हैं, क्यूँकि वे असुरक्षित नौकरियों में ज़्यादा कार्यरत हैं।
- 84% ने बताया कि नौकरी के अवसर पर्याप्त नहीं हैं।
- 84% ने पैसों की अत्यधिक तंगी के बारे में बताया।
- 63% ने खाने की कमी के बारे में बताया; बिहार में 71% ने खाने की कमी के बारे में बताया।
- 70% अल्पसंख्यकों ने बताया कि घर में पर्याप्त भोजन नहीं है।

तुरन्त स्कूल खोलो

स्कूलों को पुनः खोलने के कारण संक्रमण की उच्च दर का ख़तरा, शिक्षा-सम्बंधी हानि और पिछले इतने वर्षों में प्राथमिक शिक्षा में सर्वव्यापी भागीदारी से हुए लाभ को खोने के ख़तरे की तुलना में, बहुत कम है।

- मॉडलिंग अध्ययन के हालिया प्रमाण दिखाते हैं कि सिर्फ़ स्कूल बंद करने से केवल 2-4% मौतों को रोका जा सकता है, जो अन्य रणनीतियों जैसे सामाजिक दूरी की तुलना में बहुत छोटा प्रतिशत है।
- जिन देशों ने स्कूल खोले या जिन्होंने स्कूल बंद ही नहीं किए, उन देशों का डाटा प्रति 100,000 लोगों पर प्रतिदिन 1 नए केस से कम के निम्न सामुदायिक संक्रमण दर को दिखाता है।
- स्कूलों में बच्चे से बच्चे को संक्रमण की प्रवृत्तियाँ कम हैं, जो यह दिखाता है कि स्कूल परिसर में संक्रमण को रोकने के लिए उचित रोकथाम रणनीतियाँ प्रभावी हो सकती हैं।
- 10-14 वर्षीय बच्चों की तुलना में 9 वर्ष या उससे छोटी उम्र के बच्चों में निम्न सेरो-प्रेवेलेंस और संवेदनशीलता देखी गयी है।
- अध्ययन दिखाते हैं कि परिवार के संक्रमित सदस्यों के संपर्क में होने वाली समान स्थितियों में, वयस्कों और किशोरों की तुलना में 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में संक्रमण बहुत कम है। (लैन्सेट कोविड-19 कमिशन, 2021)

शिक्षा को पुनः चालू और नवीकृत करना: स्कूल खोलने के लिए सुझाये गए उपाय

- स्कूलों को सुरक्षित तरह से खोलें: स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए क़दम; शिक्षकों का टीकाकरण और जाँच; पूर्व-नियोजित बैठने का इंतेजाम; हर कक्षा में सीमित संख्या में छात्र, उदाहरण के लिए, एक-एक दिन छोड़ कर बुलाना, अतिरिक्त सार्वजनिक इमारतों का इस्तेमाल करना।
- अभिभावकों के साथ बातचीत और स्कूलों को पुनः खोलने से सम्बंधित योजना में उन्हें शामिल करना: हर बच्चे को स्कूल वापिस लाएँ।
- सरकारी स्कूलों के सभी बच्चों को मिड-डे मील दें, चाहे वे स्कूल आ पाएँ या नहीं आ पाएँ।
- छात्रों के सामाजिक-मानसिक कल्याण और शिक्षा सम्बंधी सीख में अंतर को दूर करने के लिए स्कूलों और शिक्षकों के लिए प्रभावी रणनीतियाँ बनाएँ।

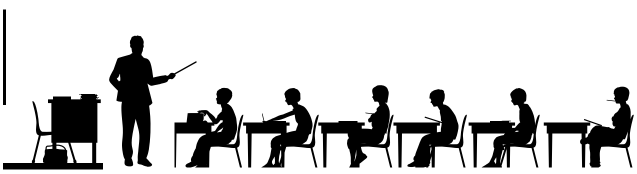

नैशनल कोएलिशन ऑन एजुकेशन एमर्जन्सी स्कूलों को पुनः खोलने से सम्बंधित रणनीतियों को समर्थन देने हेतु अच्छे व्यवहारों और प्रमाणों को एकत्रित कर रहा है।
संदर्भ: https://tinyurl.com/ncee-research-references

नैशनल कोएलिशन ऑन एजुकेशन एमर्जन्सी द्वारा तैयार किया गया
अधिक जानकारी के लिए: info@educationemergency.net | www.educationemergency.net